राम राम राम राम राम राम

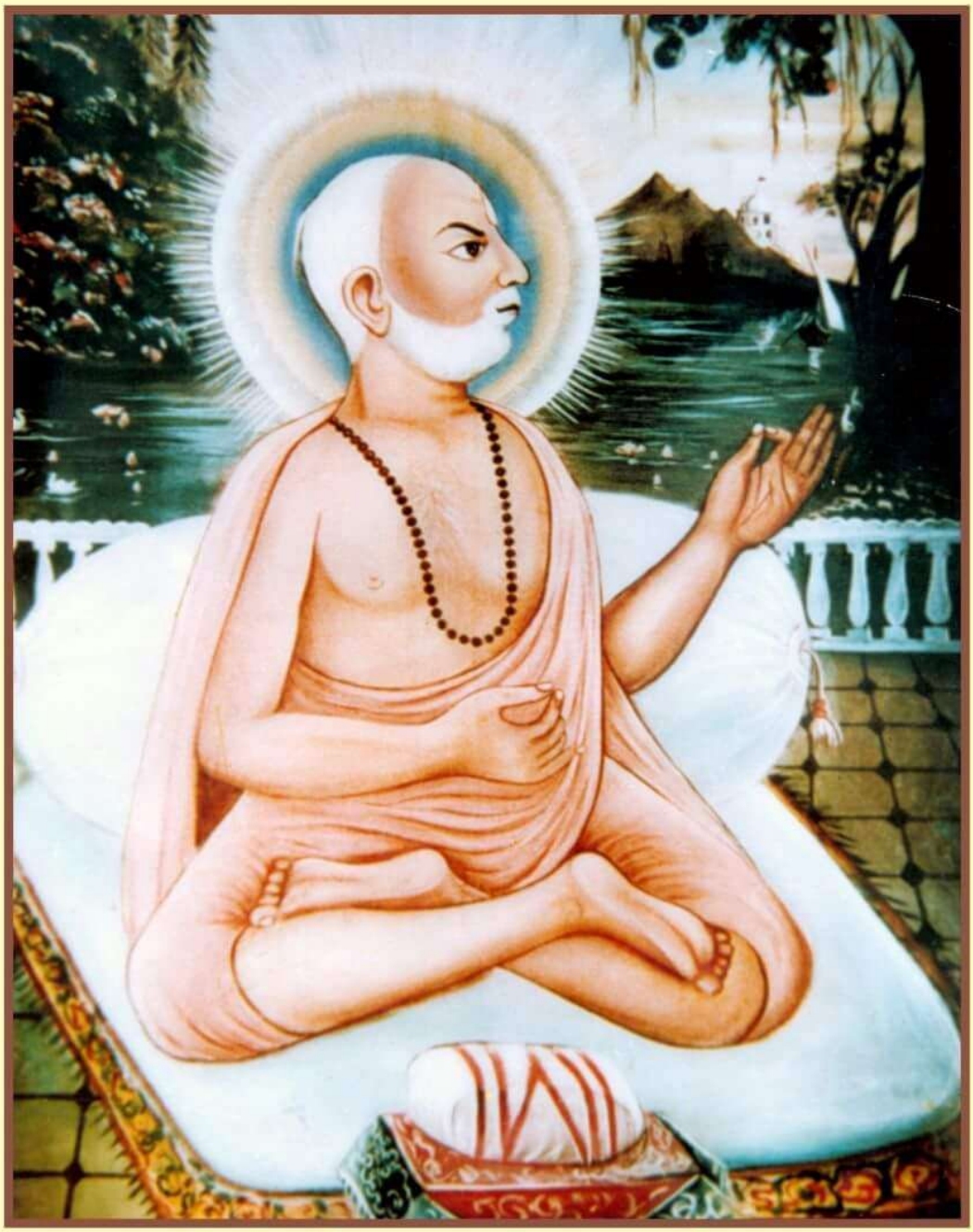

स्वामीजी श्री 1008 रामचरणजी महाराज

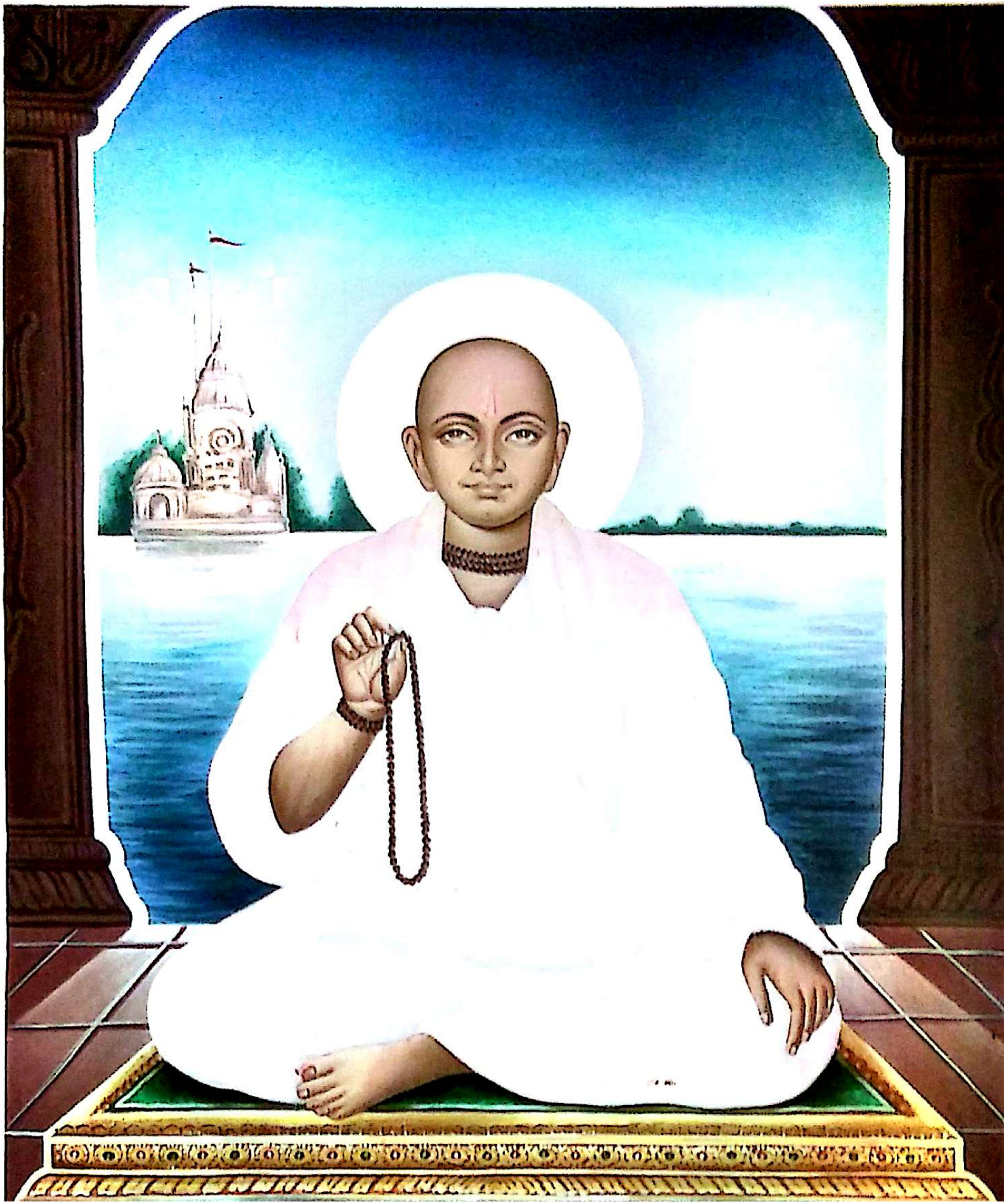

स्वामी श्री १०८ श्री गोविन्दरामजी महाराज

राम
राम

Digital Ramsnehi

TEAM

ॐ श्रीमद् रामचरणाय नमः ॐ

श्री रामस्नेही नवीन भजन बिन्दू

— प्रकाशक —

बाबूलाल विजयवर्गीय

सण्डोला (टोंक)

मूल्य - 5 रु० मात्र

❀ श्रीमद् रामचरणाय नमः ❀

卐

श्री रामस्नेही नवीन भजन बिन्दू

卐

— प्रकाशक —

बाबूलाल विजयवर्गीय

सवढोला (टोंक)

❖ महामन्त्री ❖

रामस्नेही पैदल यात्रा संघ

टोंक (राज०)

❀ मार्ग दर्शन ❀

संत श्री रामस्वरूप जी महाराज एवं

संत श्री रामनिवास जी महाराज

रामद्वारा, टोंक (राज०)

साघ पंचमी महोत्सव

सं० 2052

दिनांक

मूल्य - 5 रु० मात्र

कहाँ क्या है ?

पेज सं०	विवरण
1–	साखी, राम गुरू महामन्त्र आरती स्वामी रामचरण जी
2–	आरती स्वामी कान्हड़दास जी महाराज गुरू प्रार्थना
3 -	भजन - दर्शन देओजी स्वामी रामचरण जी
”	भजन - जावां शाहपुरा मे म्हेतो
4–	” आओ आओरे सब भाई
5–	” राम नाम सार है
6–	” स्वामी रामचरण महाराज वारी जाऊं चरणां में
7–	” हठ मत पकड़े मात देवहुति
8–	” शाहपुरा का स्वामी थांके पैदल पैदल
”	” थांका चरणां में शीश नवातां हो
9–	” सोडा में आकर जन्म लिया
10	” सोडा बनवाडा भीलवाड़ा
11	” स्वामी रामचरण जी को बनवाडो
13	” आओ जी मेरे रामचरण स्वामी
13	” म्हांने सोडो प्यारो लागे
15	” प्रीतो लागी जी रमेया
17	” चालो शाहपुरा निज धाम
19	” जन्म दिन स्वामी को आयो
21	” कौने पावे थांको पार
23	” एक बार आओजी स्वामी म्हां के पांवणा
24	” सुनले रामचरण अवतारी
25	” कांई सोचे भक्ता खड़ा खड़ा
26	” राम राम करते स्वामी आये दातड़ा धाम
27	” चम चम चमके स्वामो जी
28	” मन में आवेरे शाहपुरा धाम जाऊंला

❀ श्रीमद् रामचरणाय नमः ❀

मेरी कलम से –

परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्री श्री 1008 श्री रामचरण जी महाराज की अनुकम्पा से "रामस्नेही नवीन भजन बिन्दु" का प्रथम प्रयास प्रस्तुत करते हुए अत्यधिक हर्ष हो रहा है। यह संग्रह टोंक से शाहपुरा के लिए प्रति वर्ष प्रस्थान करने वाली पैदल यात्रा को मध्य नजर रखते हुए किया गया है।

इस पुस्तिका के प्रकाशन में मेरे साथ विशेष रूप से रामद्वारा टोंक के संत श्री रामनिवास जी महाराज का आशीर्वाद रहा। उन्हीं का निर्देशन मुझे बराबर मिला। साथ ही रामद्वारा टोंक के ही संत श्री रामस्वरूप जी महाराज का मार्ग दर्शन भी मुझे मिला जिससे मुझे प्रकाशन कार्य आसान हुआ!

मैं विशेष रूप से आभारी हूँ उन समस्त विज्ञापन-दाताओं का जिन्होने विज्ञापन देकर इस पुस्तिका के लिए आर्थिक सहयोग भी दिया। इसके अलावा श्री मदनलाल जी विजयवर्गीय झिरोना (टोंक) का भी आभारी हूँ जिन्होने न केवल स्वरचित भजन उपलब्ध कराये बल्कि धन संग्रह भी करवाया।

एक बार पुनः आप सबका आभार प्रकट करते हुए –

रामस्नेही भक्त

बाबूलाल विजयवर्गीय

सण्डोसा (टोंक)

महामन्त्री

रामस्नेही पैदल यात्रा संघ

रामद्वारा, टोंक

❀ श्रीमद् रामचरणाय नमः ❀

॥ श्रीमद् कान्हड़दासाय नमः ॥

❀ श्री सदगुरू चरण कमलेभ्यो नमः ❀

साखी

प्रणभें पद प्रकाश के दायक सतगुरू राम ।
प्रनत कोटि जन सहाय के, ताहि करु प्रणाम ॥

रमतीत राम गुरुदेव जी, पुनि तिहु काल के सत ।
जिनकूं रामचरण की, वन्दन बार अनन्त ॥

नमो राम गुरुसंतजन, सब मेरे सिरताज ।
कान्हड की निज वीनती, तिरधा राखो लाज ॥

●●

राम गुरू महामंत्र

राम नाम तारक मंत्र सुमिरे शंकर शेष ।
रामचरण सांचा गुरू, देवेयो उपदेश ॥

सतगुरू बक्शे राम नाम, शिष्य धारे विश्वास ।
रामचरण निशिदिन रटे, निश्चय होय प्रकाश ॥

❖❖

आरती स्वामी रामचरणजी महाराज की

आरती रमता राम तुम्हारी, तुमसे लागी सूरत हमारी ।
रमता राम सकल भरपूरा, सूक्ष्म स्थूल तुम्हारा नूरा ॥

आरती सुमिरण सेवा कीजे, सब निर्दोष ज्ञान गह लीजे ।
ये ही आरती ये ही पूजा, राम बिना दरसे नहीं दूजा ॥

शिव सनकादिक शेष पुकारे, यह आरती भव सागर तारे ।
रामचरण ऐसी आरती ताके, अष्ठसिद्धि नव निधि चेरी जाके ॥

आरती स्वामी कान्हड़दासजी महाराज की

आरती एक रामजी तेरी, मिनख जनम यह मौसर नैरो।
प्रथम आरती गुरू की कीजे, जिनकी किरपा जुग जुग जीजे ।।

दूसरी आरती दिल में देवा, निशिदिन करियो उनकी सेवा।
तीसरी आरती तृष्णा त्यागी, राम नाम से लिवल्यां लागी ।।

चौथी आरती चितवन होई, अरसपरस मिल हरिसम होई।
पंचमी आरती कान्हड़ गावे, निजपद माहिं जाये समावे ।।

❖❖

गुरू प्रार्थना

आप हो गुरूदेव दिनपति, अगमज्ञान प्रकाश है।
उर नयन के तुम देयवायक, अज्ञतातिम नाश है ।।

यथा निज पद पाईयो हम, आप कृपा पूर है।
नमो जी रिछपाल सतगुरू, काल कंटक दूर है ।।

संग सत गुरूदेव जी को, महाभागो पाय है।
भरम करम अरू शर्म संशय सोग सारो जाय है ।।

शुद्ध आतम अमल पेखे, पाय नहचो नाम को।
अहंकृत अज्ञान भागो, रंग लागों राम को ।।

गुरू नित गुणकार प्रगट, दीन के दयाल है।
रामचरण चित चरण लीनो, कियो मोहि निहाल है ।।

※※

❖ दोहा ❖

काल मिटाये दूर पूर, महर महाराज कर।
सतगुरू आनन्द मूर, चूर कर्म चेतन किया ।।

भजन (1)

[तर्ज – आजा ये म्हारी कंवर लाडली]

दर्शन देओ जी स्वामी रामचरण जी, चरणां में आया जी
दर्शन देओ जी ।।टेर।।

1. थांका दर्शन खातिर स्वामी, शाहपुरा में आया जी।
थांकी महिमा लागे प्यारी, मन में भाया जी ।।
दर्शन देओ जी .....

2. थांल सजाकर करूं आरती, भेंट चढ़ाऊं जी।
अब तो स्वामी दर्शन दे दो, क्यूं तरसाओ जी ।।
दर्शन देओ जी.....

3. म्हे छां भक्त भोला डाला, भक्ति भाव नहीं जाणांसा।
थे ही म्हां की पार लगासी, या ही जाणांसा ।।
दर्शन देओ जी.....

4. काम क्रोध मद लोभ बीच में, काया फस गयी म्हांकी जी।
जीवन नैया पार लगाओं, आसां थांकि जी ।।
दर्शन देओं जी.....

5. फूल डोल का मेला में स्वामी, रोगी दुखिया आवे जी।
"बाबूलाल" भी दर्शन पाकर, आशीष पावे जी।:
दर्शन देओ जी..... .....

❖❖

भजन (2)

[तर्ज – नखरालो देवरियो]

जावां शाहपुरा में म्हें तो आज, आनन्द म्हां के छाय रहये।
छाय रहयो जी म्हां के छाय रहयो, जावां.....

1- सोडा भी जावां म्हे तो बनवाड़ा भी जावां,
भीलवाड़ा भी जावां म्हे तो दातड़ा भी जावां,
लेवां शाहपुरा में आशीर्वाद। आनन्द..........

2- बनवाड़ा की महिमा देखो, छोटो सो यो गांव,
रामचरण जी प्रगट्या अठे, बणग्यो यो तो धाम,
अठे आवे यात्री अपार। आनन्द......................

3- झांकी जी की लारां लारां, भजन कीर्तन गावां,
रामचरण जी नाम, सारा मार्ग मांही लेवा,
म्हे तो नाचांला गावांला आज। आनन्द...........

4- "बाबूलाल" की विनती सुणज्यो, सारा दीज्यो ध्यान,
रामचरण जी का नाम से ही, होसी पूरण काम,
म्हे तो पैदल ही जास्यां हर साल। आनन्द...........

☼☼

भजन (3)

आओ आओ रे सब भाई पैदल यात्रा वालां,
पैदल यात्रा चालां रे, शाहपुरा धाम की चालां।
आओ..............

※ रामद्वारा टोंक से, शाहपुरा धाम को चालांला,
स्वामी रामचरण जी दर्शन करके, सब सुख पावांला।
आओ.......................

※ स्वामी रामचरण जी की झांकी कैसी प्यारी लागे छः,
झांकी के आगे पीछे माता बहिना, भजन गावे छः।
आओ.......................

* स्वामी रामचरण जी की झांकी के आगे संत चाले छः।
सब संता का दर्शन करबा, भक्त आवै छः ।।
आओ..... .....

* कोई मोटर में कोई गाड़ी में, आंपा पैदल चालाँला।
श्री रामनिवासधाम का भी आंपा दर्शन पावांला ।।
आओ..... .....

* स्वामी रामचरण जी की झांकी के आगे आपां चालांला।
नाचां कूदां, गावां बजावां, रामधुनी बोलांला ।।
आओ.....

* "मदनलाल" चरणां को सेवक, अरजी सुण लीज्यो।
म्हारी अरजी ऊपर स्वामी, गौर करलीज्यो ।।
आओ.....

**

भजन (4)

राम नाम सार है भजो तो बेड़ापार है।
आओ मेरे स्वामी जो तुम्हारा इन्तजार है ।।

माता थांकी देवहुति, पिता बखतराम है।
नानाजो के द्वारे स्वामी, लियो अवतार है ।।
राम नाम .....

सोडा में अवतार लियो, बनवाडा में आयो है।
माता पिता की सेवा करके, आशीर्वाद पायो है ।।
राम नाम.....

स्वामी जी सूता द्वार में, सूता सपनो आयो है।
सपना मां ही स्वामो जी, नदिया में बहरहया है।
राम नाम.....

स्वामी जी ने सोचा, झूठा ये संसार है।
बनवाड़ा को त्याग स्वामी, दांतड़ा में आये है।।
राम नाम.....

गुरूजी की आज्ञा पाकर, भीलवाड़ा पधार्‌या है।
बावड़ी में बैठ स्वामी, भक्ति भी कीन्हीं है।।
राम नाम.....

शाहपुरा बैकुण्ठ धाम, स्वामी जो पधार्‌या है।
रामस्नेही पंथ को, आगे ही चलाया है।।
राम नाम.....

भजन (5)

स्वामी रामचरण महाराज, वारी जाऊं चरणां में टेर।
चरणां में जो थांका चरणां में।। स्वामी.....

❖ शाहपुरो थांको धाम बण्यो छ:2
जी को सूरज सामू छार।। वारी.....

❖ बखतराम जी रा पुत्र कहवाया2
माता देवहुति रा प्यारा लाल।। वारी.....

❖ भीलवाड़ा मांही भक्ति कर्‌या छो2
यो दांतड़ों गुरूजी को धाम।। वारी.....

❖ कांई चढ़ाऊं आपके था2
म्हे आयो हाथ पसार।। वारी.....

❖ बनवाडो थांको खास गांव छः
सोडा में लीनो अवतार ।। वारी.....

❖ फूल डोल रो मेलो भरयो छः
दर्शन की लग रही आस ।। वारी.....

❖ बाबू चरणां शीश नवावे,
म्हारी सुणज्यो करूण पुकार ।। वारी.....

❖❖

भजन (6)

(तर्ज – हठ मत पकड़े पार्वती .....)

हठ मत पकड़े मात देवहुति, स्वामी रामचरण जी जन्म लियो ।।टेर।।

नानाजी के घर जन्म हुआ, सोडा में मंगलाचार हुआ ।
नानाजी पण्डित जी के आया, रामकिशन जी नाम धर्‌यो ।1।

सोडा से बनवाड़ा आये, घर घर आनन्द छाय रह्यो ।
गौत्र कापड़ी विजयवर्गीय, श्री बखतराम जी के पुत्र भयो ।2।

चान्दसेन में बारात ले गया, बाई गुलाब संग ब्याव कियो ।
रामकिशन जी सूना घर में, सपना में नदिया बह रह्या ।3।

नदिया बहता ने संत निकाल्या, आंख खुली जब ज्ञान हुयो ।
मात-पिता और घर की नारी, त्याग आप वैराग लियो ।4।

ढूंढत-ढूंढत आये दांतड़ा, रामस्नेही मत चला दिया ।
मदनलाल की अरजी सुणज्यो, थांकी शरणां में ले लोज्यो ।5।

✻✻
✻✻

भजन (7)

[तर्ज - म्हे हूँ छोरी मालन की.....]

शाहपुरा का स्वामी थांके, पैदल पैदल आरह्यो हूं2
शाहपुरा का स्वा—मी—जी—

1. फूलडोल को मेलो भरयो है, लाखों यात्री आया छ।2
पैदल आया टोंक से....2 था के शरणां आया छः ।टेर।

2. शाहपुरा में धाम बणी है, जी की महिमा भारी है2
चरणां में शीश नवाता ही....2 बेडापार हो रही है ।टेर।

3. बारादरी का दर्शन करके, खम्भ समाधी जावांला2
टाबरिया मिश्री से बोलां....2 सदा खुशी म्हे रहवांला ।टेर।

4. बाणी जी को पाठ सुणाला, राममेड़ी म्हे जावाला2
सब संता का दर्शन करके....2 आशीर्वाद पावाला ।टेर।

5. "बाबूलाल" गुरु कृपा से, आशीष थाकी पावे है2
रामदयाल जी स्वामी की....2 यो जय जय कार गावे है ।टेर।

भजन (8)

[तर्ज – म्हारा हाथ का झाला से मोटर डब जावे....]

थांका चरणां में शीश नवाता ही संकट मिट जावे म्हारा स्वामी जी।
अबके तो म्हाने शाहपुरा बुलवाल्यो ।।

★ सोडा भी जाऊं म्हे तो बनवाडा भी जाऊं।
म्हाने शाहपुरा रो धाम तो दिखादयो म्हारा स्वामी जी ।।
अबके.....

★ गाड़ी में नहीं जाऊं म्हे तो मोटर में नहीं जाऊं।
पैदल यात्रा में मनडो म्हांको लाग्यो जी म्हारा स्वामी ।।
अबके.....

★ गुदड़ी रा दर्शन पाऊं म्हे तो गादी रा दर्शन पाऊं।
म्हाने समाधी रा दर्शन तो करादयो म्हारा स्वामी जी ।।
अबके..... .....

★ बारादरी भी जाऊं म्हे तो राममेड़ी भी जाऊं।
स्वामी रामदयालजी रो आशीष, दिलादयो म्हारा स्वामी।
अबके..... .....

★ बाबूलाल चरणां को सेवक, अरजी आपके ल्यायो।
म्हारी अरजी ऊपर मरजी तो करलीज्यो म्हारा स्वामी ।।
अबके..... .....

भजन (9)

[तर्ज – बन जाने वाले रघुवर को.....]

सोडा में आकर जन्म लिया, श्रीराम चरण जी स्वामी ने टेर।
रामचरण जी स्वामी ने, श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।
सोडा.....

❀ बखतराम जी कापड़ो और देवहुति की गोद से।
नाना के घर अवतार लिया, श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।

❀ कलियुग में धर अवतार प्रभू, प्रगटे शुभ कर्म कमाने को।
मुक्ति का मार्ग दिखा दिया, श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।

❀ अज्ञान अविधा है जग में, घनघोर घटा जो छायो है।
निजज्ञान वाक से उड़ा दिया, श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।

❀ जगतोराम के सब भक्त हुए, एक दिव्य प्रकाश उमड़ आया।
जब शस्त्र भक्ति का उठा लिया, श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।

❀ झुक गये विधर्मी चरणों में, तन मन धन अर्पित कर सारा।
राम का मन्त्र सिखा दिया श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।

❀ जो शंकर का भी इष्ट रहा, प्रहलाद नेथा जिसको ध्याया।
वो बारक मंत्र सिखा दिया, श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।

❀ स्वामी रामकिशोरजो की कृपा से मदनलाल ने यश गाया।
रामस्नेही मत चला दिया श्री रामचरण जी स्वामी ने ।।

❀❀

भजन (10)

(तर्ज – बज जाने वाले रघुवर को·····)

सोडा बनवाड़ा भीलवाड़ा, बैकुण्ठ धाम है शाहपुरा ।टेर।
बैकुण्ठ धाम में शा°पुरा, बैकुण्ठ धाम है शाहपुरा ।।

❖ सोडामें स्वामी का जन्म हुआ, बनवाड़ा में आकर ज्ञान हुआ।
भीलवाड़ा में आकर भक्ति करी, बैकुण्ठ धाम····· ····

❖ वाणी जी का प्रचार किया और रामस्नेही मत चला दिया।
सब राम राम रटते रहो, बैकुण्ठ धाम है·····

❖ समाधी का एक खम्भ पर यह रामद्वारा सारा है।
सब संत विराजे बारादरी, बैकुण्ठ धाम है·····

❖ ढूंढत ढूंढत स्वामी जी, यह नगर दांतड़ा आये थे।
गुरूजी का दर्शन पाकर के बैकुण्ठ धाम है·····

❖ चंवर नगर में आकर के गुदड़ी के भेष को त्याग दिया।
सब संतो को छोड़ चले, बैकुण्ठ धाम है.....

❖ गौत्र कापड़ी विजयवर्गीय, बखतराम जी के पुत्र भये।
माता देवहुति को छोड़ चले, बैकुण्ठ धाम है.....

❖ स्वामी रामकिशोर जी की कृपा से, मदनलाल ने यश गाया।
रामस्नेही मत चला दिया, बैकुण्ठ धाम है.....

भजन (11)

स्वामी रामचरण जी को बनवड़ो, म्हाने प्यारो लागे बनवाड़ो।
म्हारा मन में बस गयो बनवाड़ो, म्हारे डील में रम ग्यो बनवाड़ो।

स्वामी रामचरण जी की चरणा रज से पावन हो गयो बनवाड़ो।
बीजावर्गी बखतराम राम घर, जन्म लियो सो बनवाड़ो।।

गौत्र कापड़ी मात देवहुति के, पुत्र भयो सो बनवाड़ो।
सात मास इकतीस वर्ष तक, वास कियो सो बनवाड़ो।।

रामस्नेही सम्प्रदाय को, धाम बन्यो सो बनवाड़ो।
शाहपुरा भीलवाड़ा सोडा, प्रथम धाम यो बनवाड़ो।।

जन्म लियो नानाजी के सोडे, खास गांव थांको बनवाड़ो।
राम भजन भीलवाड़ा कीनो, शाहपुरा छोड़यो बनवाड़ो।।

बदरी को मन घणो लुभायो तज्यो जाये नहीं बनवाड़ो।

भजन (12)

[तर्ज - आजा रेऽऽ.....आजा मेरे दिलबर आजा]

आओ जीऽऽऽ आओ मेरे रामचरण स्वामी
आके दरश दिखाओं जी। टेर।

❖ भक्त खड़े है द्वार पे तेरे, ले पुष्पन की माला,
दरश मेरे को दे दो स्वामी, ओ शाहपुरा वाला। आओ.....

❖ शाहपुरा नगर में स्वामी का, धाम बणा है आरमा,
रोगी दुखियों के एक सहारे, आपही खेपन वाला। आओ.....

❖ पैदल पैदल टोंक से आते, भजन कितंन गाते,
फूल डोरल के मेले में प्रभू, संतों के दर्शन पाते। आओ.....

❖ वाणीजी का पाठ सुणां ओर, गुदड़ी का दर्शन पावां,
बारादरी में जाकर प्रभू, मन चाहा फल पावां। आओ.....

❖ तेरे दरश को तरस रही प्रभू, ये दुनिया दुखियारी,
"बाबूलाल" सण्डीला वासी, आयो शरण तिहारी। आओ.....

भजन (13)

[तर्ज - शंकर प्यारा लागो.....]

म्हाने सोडो प्यारो लागे बनवाडो प्यारो लागे2
म्हाने शाहपुरा रो धाम प्यारो लागेजी म्हारा स्वामीजी दरस दिखाओजी

※ थांको जनम गांव छः सोडो और खास गांव बनवाड़ों,
थांकी शाहपुरा री शादी प्यारी लागेजी म्हारा स्वामीजी।
दरस.....

※ थांका तन पर चादर सोहे, जी को रंग गुलाबी होवे,
थांका हाथ में वाणी जी प्यारी लागेजी म्हारा स्वामी जी।
दरस.....

※ थांके रोगी जी दुखिया आवे, मन चाहा फल वे पावे,
थांको दरसन करबों प्यारो लागे जी म्हारा स्वामी जी।
दरस.....

※ थे भक्ति करीछी भारी, थांने ध्यावे नर और नारी,
थे सत्यनारायण पर दयाकी दृष्टि डालोजी म्हारा स्वामीजी।
दरस.....

भजन (14)

प्रीति लागी जी रमैया थांका चरणां में, दर्शन करस्वा सोडा में ।

✻ लियो सोडा में अवतार, माता देवहुति के लाल ।
घर घर हो रहया मंगलाचार, रकशिया छाई है बनवाडा में ।।
दर्शन..... .....

✻ कीनी आप तपस्या भारी, तजदी माया और नारी,
गुरूजी की आज्ञा दिल में धारी,
भजन कियो है भीलवाड़ा में । दर्शन.....

✻ थे छो शाहपुरा का राजा,
थे छो राजा का महाराजा,
सूरज पोल्यां में । दर्शन.....

✻ किया समाधि का दर्शन,
मैं तो आया थांकी शरण,
सबकी करज्यो मनसा पूर्ण,
थांकी गुदड़ी बिराजे भण्डार में । दर्शन.....

✻ देखी हवामहल की झांकी,
सुन्दर लागे मूरत थांकी,
मैं तो मगन भया नर नारी
कवंर पदां का महलां में । दर्शन..... .....

✻ म्हांके थांको ही आधार,
म्हांके थे ही मायर बाप,
थां बिना कोई नहीं है नाथ,
थे तो लियो अवतार विजयवरग्यां में । दर्शन.....

✻ थे तो दीनो के दयाल,
मांको राखो ख्याल,
सबकी करज्यो प्रतिपाल,
असी अरज करां थांका चरणा में । दर्शन..... ....

प्रीती लागी जी.....

भजन (15)

चालो शाहपुरा निजधाम, भजे जा रामा रामा
भजे जा रामा रामा, भजे जा रामा रामा। चालो.....

※ सोडा और बनबाड़ा, स्वामी आये दांतडा माही2
गुरूजी का दर्शन पाकर के, भजे जा रामा रामा।
चालो.....

※ नगर भीलवाड़ा मांही, स्वामी रहे बावड़ी मांही2
दर्शन करते है नरनार, भजे जा रामा रामा।
चालो.....

※ फूल डोल का मेला और थाल आपके आवे2
वाणी जी का दर्शन करस्यां, भजे जा रामा रामा।
चालो.....

※ रामद्वारा जास्यां, गुदड़ी का दर्शन करस्यां2
संता की वाणी सुणस्यां, भजे जा रामा रामा।
चालो.....

※ बारादरी में जास्यां, स्वामी रामदयाल जी का दर्शन करस्यां,
टाबरिया ने मिश्री से तोलां रे, भजे जा रामा रामा।
चालो.....

※ मदन भिराना वाला, यह भजन आपका गावे2
चरणां में शीश नवावे रे, भजे जा रामा रामा।
चालो.....

भजन (16)

[तर्ज – इस कुञ्जन में ठहरायो .. ..]

जन्म दिन स्वामी को आयो, शुभ दिन स्वामी को आयो,
तभ को भयो विनाश उजालो, घर में होई आयो । टेर ।

* घर घर माही भजन कीर्तन, हर्ष हर्ष गावै,
प्रभूजी सब मिल गावे
ऐसो है त्यौहार रोशनी, घर घर में आवे । जन्म.....

* स्वामी रामचरण जी, प्रगटे कलि में आय,
प्रभूजी प्रगटे.....
दर्शन करतां अघ मिटे जी कोई पुण्य उदय हो जाये । जन्म .....

* जन्म लियो नाना के सोडे, ग्राम है बनवाडो,
प्रभूजी ग्राम.....
जयपुर होय दीवान, दीक्षा ले धारयो । जन्म.....

* विजयवर्गीय जाति माही, लियो आप अवतार,
प्रभूजी लियो.....
मेवाड़ देश पावन कियो, राममंत्र बताय । जन्म.....

* भीलवाडो निजधाम गुरां को, शाहपुरो भारी
प्रभूजी शाहपुरो.....
नरनारी तो दर्शन करके, उतरे भवपारी । जन्म.....

* रामचन्द्र ज्यूं रामचरण, है ईश्वर अवतार
वां तारी अयोध्या, यां तारी मेवाड़ । जन्म.....

卐

भजन (17)

कौने पावे यांको पार, प्रेम नदिया की सदा उल्टी बहवै धार ।टेर।

❀ माघ का महिना, जग में मच्यो शोर ।
जन्म लिया स्वामी रामचरण जी खुशियां चारों ओर ।।
कौने पावे ....

❀ सोडा मांही जन्म लिया है, नानाजी के द्वार ।
बनवाडा में खुशियां छाई, घर घर मंगलाचार ।।
कौने पावे.....

❀ भीलवाड़ा में भजन करया है, सात बरस इकसार ।
शाहपुरा में आन बिराज्या, रामरूप अवतार ।।
कौने पावे.....

❀ रामचरण ज्यों रामचन्द्रजी, है ईश्वर अवतार ।
यां तारी अयोध्या, यां तारी मेवाड़ ।।
कौने पावे.....

❀ सूरज ऊपर काश बहुत है, शीतल चन्द्र समान ।
अवतल आप निहार के सुमरावे भगवान ।।
कौने पावे.....

❀ रामचरण महाराज के, शिष्य भये अपरम्पार ।
जाकी गादी वे तये, स्वामी रामदयाल महाराज ।।
कौने पावे.....

भजन (18)

(एक बार आओ जी जवाई जी पांवणा)

एक बार आओजी स्वामी म्हां के पांवणा2
थांने भक्त बुलावे घर आज, स्वामी जी थांने याद करां।

✡ फूलां रो थांने हार पहनाऊँ2
म्हारी डूबती नया ने करज्यो पार।
स्वामी .....

✡ सांचा रे मन से भोजन बनाऊँ2
थांकी लुण-लुण करूं मनुहार।
स्वामी..... .....

✡ गंगा रे जल से स्नान कराऊँ2
थांके घिस-घिस चन्दन लगाये।
स्वामी.....

✡ कण्ठां में माला थांके हाथ में वाणी2
थांके चादर गुलाबो चढ़ाऊँ।
स्वामी..... .....

✡ मिश्री पताशा थांके भोग चढ़ाऊँ2
सत्यनारायण थांका ही गुण गाये।
स्वामी जी.....

●●●

भजन (19)

सुनले रामचरण अवतारी, थांरी महिमा जग में भारी,
थांने ध्यावे नर और नारी, म्हारा स्वामी जी।
ओ म्हारा स्वामी जी.....

❖ दरसन संता का थे कीन्हा, सपना सांचा थे करदीना,
भक्ति रामसानां में कीन्हा।
म्हारा स्वामी जी..... ... ...

❖ भक्ति रामचरण की जागी, दुनियां दरसन करबा आगी,
धाम शाहपुरा में लागी।
म्हारा ... .

❖ थांके हर साल होता मेला, भीड़-भाड़ और झमेला,
लोगां लाग टेलम टेला।
म्हारा... .....

❖ थांके बांझड़ल्यां भी आवे, रोगी जोगी दुःखया आवे,
सभी दर्शन कर सुख पावे।
म्हारा... ....

❖ थांकी धाम मन में भावे, दुनियां दरसन करबा आवे,
संता थांका ही गुण गावा।
म्हारा.....

सौजन्य – विजयवर्गीय केसेट्स, टोंक

भजन (20)

(तर्ज – क्यूं मोगे कमला खड़ी खड़ी)

कांई सोचे भक्ता खड़ा खड़ा2
म्हारे रामद्वारे आजा2, म्हारा शाहपुरा में आजा
थारा संकट मेटूं बड़ा बड़ा ।

❖ थांके रामद्वारे आस्यूं, बारादरी का दर्शन करस्यूं,
म्हें राम रटूलां पल पल जी ।
म्हारा संकट.....

❖ म्हारे रामद्वारे आजे, थारा मन की पूरी करजे,
साथीड़ां में लाजे लारां रे 2 ।
थारा संकट.....

❖ थांके रामद्वारे आस्यूं, टाबरिया ने मिश्री सूंतोलं:
म्हे दण्डवत करस्यू पड़यो पड़यो जी2 ।
म्हारा संकट.....

❖ म्हारे रामद्वारे आजे, खम्भा का दर्शन करजे,
तू सुखी रहवेलो सदा सदा2 ।
थारा संकट.....

❖ दर्शन करबा "बाबू" आवे, गुरू कृपा से आशीष पावे,
फूल डोल में बुलाज्यो सदा सदा2 ।
म्हारा संकट.....

भजन (21)

(तर्ज – यो साल पहले मुझे तुमसे प्यार था)

राम राम करते स्वामी, आये दृतड़ा धाम को।
चरणों में लेलो स्वामी, बनवाडा के लाल को। टेर।

★ विजयवर्गीय बखतराम जी, गुरू कापड़ी गोत्र से 2
सोडा में मेरा जन्म हुआ, देवहुति की कोख से 2
शनिवार का दिन गुरू, सत्रह सौ छियत्तर साल को।
चरणों.....

★ जाति कर्म करते करते आया एक सपना 2
सपने में देखा मैंने, शरीर बह गया अपना 2
एक प्रतापी संत ने, पकड़ खींचा हाथ को।
चरणों.....

★ खोज में निकला मैं तो, छोड़ मोह संसार से,
आज पाया मैंने उनको, खींच लिया था धार से,
मुझे चरणों में ले के, देवो मन्त्र राम को।
चरणों में.....

★ राम चरण हो गये अब, रामकिशन जिसका नाम था,
कठिन परीक्षा गुरू ने लीनी, दिया मंत्र राम का,
बाबू सपड़ोला वाला अरजे, दर्शन करो ऐसे धाम का।
चरणों में.....

भजन (22)

चमचम चमके जी स्वामी जी थांको रामद्वारो।
रामद्वारो जी थांको रामद्वारो चम चम.....

卐 रामचरण जी स्वामी महिमा, गाथा थांकी गाऊं,
शाहपुरा नगरी में बाबा नित उठ दर्शन पाऊं,
बैठ झरोखे देखूं सारो रामद्वारो।
चम चम.....

卐 थांका भक्ता ने स्वामी, मत नाथे तरसावो,
दे आशीष पारकर नैया, म्हांने बपूं तरसावो,
बैठयो थांके देवरे जी, देखूं रामद्वारो।
चम चम.....

卐 भगवन भक्ति कीन्ही थे तो शाहपुरा के मांही,
अस्यो धाम बणायो स्वामी, सारा जग के मांही,
नित उठ दर्शन पावे है थांके रामद्वारे।
चम चम.....

(साभार – विजयवर्गीय केसेट्स, टोंक)

भजन (23)

(तर्ज – चला चला रे ड्राईवर)

मन में आवे रेऽऽ2 शाहपुरा धाम जाऊंला
रामचरण स्वामी जी का दर्शन पाऊंला।

- आज बडो ही शुभ दिन आयो, शाहपुरा में जाऊं,
अपणां मन की सारी बांता, स्वामी ने बताऊं।
मन में.....

- पकवाना को भोग लगाऊं, मेड़यां माल मंगाऊ,
लाडू बाटी और चूरमा, परसादी में पाऊं।।
मन में.....

- चन्दन चोकी गंगाजल से, थांने स्नान कराऊ,
मन मोहक में चादर ल्याऊं, नारियल चढ़ाऊ।।
मन में.....

- गलती हो तो माफ करज्यो, यो ही देवो वरदान,
जनम मिले शाहपुरा में, नित उठ कर ज्योध्यान।
मन में.....

(साभार – विजयवर्गीय केसेट्स, टोंक)